दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 23.01.2019

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

गोरखपुर 23 जनवरी। भारतवर्ष में महापुरूषों की एक समृद्ध संपदा है जिसमें आधुनिक युग में महात्मा गॉधी, स्वामी विवेकानन्द व नेजाजी सुभाष चन्द्र बोस आदि का नाम हमें निरन्तर प्रेरणा देता रहता है। निजिगत सुख–सुविधाओं और पारिवारिक इच्छाओं को राष्ट्र सेवा के सामने अप्रासंगिक मानकर जिन्होने राष्ट्र की स्वतंत्रता और प्राचीन वैभव की वापसी के लिए कठिन संघर्ष के पथ पर अग्रसर होने उचित समझा और चयनित लक्ष्य का अनुसरण करते हुए अपने पूरे जीवन को भारत के उज्ज्वल भविष्य को सवारने में खपा दिया और संघर्ष के उस रास्ते पर बढे जहॉ उन्होने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद को त्याग कर आजाद हिंद फौज के माध्यम से ब्रितानी हुकुमत से भारत को आजाद कराने के लिए कदम आगे बढ़ाया। सुभाषचन्द्र बोस वो महापुरूष थे जिसने जो ठीक सोचा उसे चुना और उसके लिए सारी बाधाओं को पार करते हुए अपने जीवन की आहुति दे दी। उक्त उद्गार सुभाषचन्द्र बोस जयंति के अवसर पर वाणिज्य विभाग द्वारा आयोजित विशिष्ट व्याख्यान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में महाविद्यालय के बी.एड. विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राजशरण शाही ने मुख्य अतिथि के थे।

उन्होने आगे कहा कि कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब नेता जी ने जापान और जर्मनी से मदद लेने की कोशिश तो ब्रिटिश सरकार ने अपने गुप्तचरों को 1941 में उन्हे खत्म करने का आदेश दिया। 1944 को आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजो पर दोबारा आक्रमण किया और कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजो से मुक्त भी करा लिया। कोहिमा का युद्ध 04 अप्रैल 1944 से 22 जून 1944 तक लड़ा गया एक भयंकर युद्ध था। इस युद्ध में जापानी सेना को पीछे हटना पड़ा था, भारतीय स्वतंत्रता के लिए यही एक महत्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि नेता जी भारत के ऐसे सपूत थे जिन्होने भारतवासियों को सिखाया कि झुकना नहीं बल्कि शेर की तरह दहाड़ना चाहिए। खून देना एक वीर पुरूष का ही काम होता है। नेताजी ने जो आह्वान किया वह सिर्फ आजादी प्राप्ति तक ही सीमित नहीं था बल्कि भारतीय जन–जन को युग–युग तक के लिए एक वीर बनाना था।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारम्भ गणेश वन्दना से हुआ। करिश्मा वारसी ने बिहू नृत्य प्रस्तुत कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। मुस्कान त्रिपाठी, विकास सिंह, अन्नया सिंह, नम्रता मिश्रा, अभिषेक सिंह, अनामिका शुक्ला, गीताजंलि, पलक सिंह आदि ने भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर विभाग के प्राध्यापक डॉ. नीरज कुमार सिंह, डॉ. संजीव सिंह, डॉ. चण्डी प्रसाद पाण्डेय, डॉ. अमरनाथ तिवारी, श्री दीपक साहनी उपस्थित थे।

डॉ. (नीरज कुमार सिंह)
प्रभारी, वाणिज्य संकाय